प्रश्न जो आप बीच में पूछ सकते हैं

''प्रेरित पौलुस'' कौन है?

पौलुस को मूलत: ''शाऊल'' के नाम से जाना जाता था। वह एक यहूदी था, जो मूसा की व्यवस्था के प्रति आत्मसमर्पित था (फिलिप्पियों 3:5, 6)। कलीसिया की स्थापना के बाद, वह मसीहियों को सताने वाला बन गया था (प्रेरितों 7:58; 8:1, 3; 9:1, 2)। उसके मनपरिवर्तन की कहानी प्रेरितों के काम की पुस्तक के तीन अध्यायों में मिलती है: अर्थात 9, 22, और 26 में। उसे मसीह की ओर से अन्यजातियों, अर्थात गैर-यहूदियों के लिए एक विशेष उद्देश्य के साथ (प्रेरितों 9:15; रोमियों 11:13; 1 तीमुथियुस 2:7) प्रेरित होने का अधिकार मिला था (रोमियों 1:1; 1 कुरिन्थियों 1:1)। वह नये नियम की आधी से अधिक पुस्तकों (रोमियों से फिलेमोन और शायद इब्रानियों भी) का लेखक था।

क्या इससे कोई फ़र्क पड़ता है कि पौलुस और आत्मा की प्रेरणा पाए अन्य लेखकों ने क्या कहा या लिखा?

हां! समस्त नया नियम *यीशु* की नई वाचा है: जो कुछ यीशु ने व्यक्तिगत तौर पर कहा और जो कुछ उसने प्रेरणा पाए हुए लोगों के द्वारा कहा। यीशु ने अपनी मृत्यु से पूर्व, अपने प्रेरितों को यह बताया कि जो कुछ उसने उन्हें सिखाया था, उसे याद करने में उनकी सहायता के लिए उन पर पवित्र आत्मा भेजा जाएगा (यूहन्ना 14:26; देखिए यूहन्ना 16:13)। पौलुस और अन्यों ने जो कुछ भी सिखाया उसमें उन्हें पवित्र आत्मा की अगुआई मिली थी (देखिए 1 कुरिन्थियों 2:12, 13)। मत्ती 10:40 में यीशु का कथन पढ़िए। यदि आप प्रेरितों की शिक्षा को नकारते हैं, तो आप स्वयं यीशु को नकार रहे हैं और इस प्रकार परमेश्वर को भी नकार रहे हैं।

''ग्रेट कमीशन अथवा महान आज्ञा'' क्या है?

यीशु द्वारा स्वर्गारोहण से पूर्व अपने अनुयायियों को दिए गए निर्देश को ग्रेट कमीशन या सबसे बड़ी आज्ञा कहा जाता है (मत्ती 28:18-20; मरकुस 16:15, 16; देखिए लूका 24:46, 47)। ग्रेट कमीशन मसीह के सुसमाचार को ''सारे संसार'' में हर एक जाति के प्रत्येक व्यक्ति के पास प्रचार करने को कहा जाता है।

1
अधिकार

आगे बढ़ने से पहले हमें एक सामान्य अधिकार को मानना होगा। जब तक शब्दों के जोड़ में हम एक मानक शब्दकोश से सहमत न हों तब तक हम इस बात पर भी सहमत नहीं होंगे कि ''*c-a-t*'' का जोड़ ''*cat*'' बनता है। यदि हम धर्म से सम्बन्धित विषयों पर सहमत होना चाहते हैं, तो हमें पहले इस पर सहमत होना होगा कि हमारा अधिकार क्या होगा।

परमेश्वर का वचन हमारा अधिकार है

धर्म में हमारा अधिकार क्या होना चाहिए? संसार बहुत से धार्मिक अधिकारों को मानता है। बहुत से लोग धार्मिक गुरुओं और प्रचारकों के दावों को अधिकार मानते हैं। तथापि, परमेश्वर, केवल एक अधिकार को पहचानता है: अपने वचन, बाइबल को।

बाइबल

प्रेरित पौलुस ने कहा, ''सो विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से आता है'' (रोमियों 10:17)। उसने आगे लिखा, ''हर एक पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है। ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए'' (2 तीमुथियुस 3:16, 17)।

''पवित्र शास्त्र'' शब्द का धर्म शास्त्र के लिए उपयोग किया जाता है। 2 तीमुथियुस 3 में ''पवित्र शास्त्र'' परमेश्वर के वचन को कहा गया है। ''पवित्र शास्त्र'' में पुराना नियम (2 तीमुथियुस 3:15) और नया नियम (2 पतरस 3:15, 16) दोनों आते हैं। पवित्र शास्त्र का उल्लेख अन्य प्रकार से करते हुए इसे ''वचन'' कहा जाता है (मत्ती 13:23; प्रेरितों 6:4)। पवित्र शास्त्र के लिए आज हम जिस शब्द का उपयोग करते हैं, वह है ''बाइबल।'' ''बाइबल'' मूलत: एक यूनानी शब्द है जिसका अर्थ है ''पुस्तक।'' बाइबल बहुत सी ''पुस्तकों का संग्रह'' है। बहुत सी बाइबलों के बाहर ''पवित्र बाइबल'' लिखा होता है। ''पवित्र'' शब्द का अर्थ है ''पावन।''[1] बाइबल ''पावन पुस्तक'' है क्योंकि यह परमेश्वर

की प्रेरणा से रची गई है।

''प्रेरणा'' शब्द का अक्षरश: अर्थ है ''श्वास फूंके।''[2] वाक्यांश ''परमेश्वर की प्रेरणा से'' का अर्थ है कि बाइबल ''परमेश्वर के श्वास से'' है। बिल्कुल उसी प्रकार जैसे परमेश्वर ने मनुष्य के नथनों में श्वास फूंक दिया और मनुष्य एक जीवित प्राणी हो गया (उत्पत्ति 2:7), सो परमेश्वर ने, उसी प्रकार, बाइबल ''में श्वास फूंका'' और यह एक जीवित पुस्तक बन गई। यह समझाने का एक ढंग है कि बाइबल को लिखने में परमेश्वर का नियन्त्रण था। उसने यह सुनिश्चित किया कि बाइबल में बिल्कुल वही बातें हों जिन्हें वह इसमें देना चाहता है न अधिक न कम।

2 तीमुथियुस 3:16, 17 फिर से पढ़िये। ये आयतें स्पष्ट करती हैं कि बाइबल में वह सब कुछ है जिसकी परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए हमें आवश्यकता है: यह ''शिक्षा के लिए लाभदायक'' है; यह हमें बताती है कि हमारा जीवन कैसा होना चाहिए। यह ''समझाने के लिए'' लाभदायक है; जब हम गलत होते हैं तो यह हमें आगाह कर देती है। यह हमें ''सुधारने'' के लिए लाभदायक है; यह हमें अपने जीवन को बदलने का आग्रह करती है। यह ''धर्म की शिक्षा के लिए'' लाभदायक है; यह हमारे आध्यात्मिक विकास के लिए सहायक है। ध्यान दें कि यह हमें *कुछ* भले कामों के लिए नहीं, बल्कि ''*हर एक* भले काम के लिए'' तत्पर करती है।

बहुत सी अच्छी पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं, बहुत से महान उपदेशों का प्रचार किया जा चुका है, और काफ़ी महत्वपूर्ण परामर्श दिए जा चुके हैं परन्तु हमारा एकमात्र धार्मिक अधिकार केवल बाइबल है। अध्ययन जारी रखने से पहले, हमारा इन बातों पर सहमत होना आवश्यक है:

- हमारे माता-पिता हमारा अधिकार नहीं हैं।
- कोई मानवीय प्रचारक अधिकार नहीं है।
- कोई महान धार्मिक नेता अधिकार नहीं है।
- डेविड रोपर अधिकार नहीं है।
- _____ अधिकार नहीं है।
  (अपना नाम भर लें।)
- बाइबल के अलावा कोई और पुस्तक अधिकार नहीं है।
- केवल बाइबल ही हमारा अधिकार है।

यदि आप 100 प्रतिशत आश्वस्त नहीं हैं कि बाइबल मनुष्य के लिए परमेश्वर का विशेष प्रकाश है, तो इस पुस्तक के अन्त में ''विश्वास करने की चुनौती'' का अतिरिक्त लेख पढ़िये। यदि अभी भी इस सम्बन्ध में आप के मन में शंकाएं हैं, तो उस मित्र से बात कीजिए जिसने आपको यह पुस्तक दी थी। बेशक, सम्भव है कि आपको बाइबल के बारे में और अधिक सीखने के लिए केवल समय की ही आवश्यकता है। आखिर, पौलुस ने यह

कहा है कि ''विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से होता है'' (रोमियों 10:17)। यदि ऐसा है, तो अध्ययन करते रहें।

नया नियम हमारा मार्गदर्शक है

इस प्रश्न का कि ''धर्म में हमारा अधिकार क्या है ?'' अब तक हमने उत्तर दिया है, ''बाइबल।'' तथापि, हमें अपने उत्तर को और भी सीमित करना होगा।

बाइबल के दो मुख्य भाग हैं: पुराना नियम और नया नियम। अपनी बाइबल लें और नये नियम के आरम्भ को ढूंढ़ें। पुराने अनुवाद वाली हिन्दी की बाइबल में विभाजित करने वाले पृष्ठ पर इसे ''धर्म पुस्तक का नया नियम अर्थात प्रभु यीशु का सुसमाचार'' लिखा गया है। ध्यान दें कि नया नियम पूरी बाइबल के लगभग तीन चौथाई भाग से आरम्भ होता है। पुराना नियम आकार में नये नियम से तीन गुणा बड़ा है। इसके कई कारण हैं।[3] एक यह है कि पुराना नियम विशेषकर ''तू करना'' और ''तू मत करना'' की आज्ञाओं से भरा पड़ा है, जबकि नया नियम सिद्धांतों पर अधिक केन्द्रित है।[4]

पवित्र शास्त्र के दो भागों का अध्ययन करते हुए, आप पाएंगे कि वे हमेशा एक जैसे निर्देश नहीं देते:

- पुराने नियम में, आराधना करने वाले एक भवन में जाते थे, जिसे मन्दिर कहा जाता था (भजन संहिता 5:7; हबक्कूक 2:20); नये नियम में, जब तक हम आत्मा और सच्चाई से आराधना करते हैं तब तक स्थान का कोई महत्व नहीं है (यूहन्ना 4:21, 23, 24)।
- पुराने नियम में, यहोवा को पशुओं के बलिदान भेंट किए जाते थे (लैव्यव्यवस्था 1-5); नये नियम में, यीशु हमारा सम्पूर्ण बलिदान है (इफिसियों 5:2; इब्रानियों 10:12), जबकि हमें अपने शरीरों के जीवित बलिदान भेंट करने हैं (रोमियों 12:1; इब्रानियों 13:15)।
- पुराने नियम में, पुरुषों के एक विशेष समूह को ''याजक'' का दर्जा दिया गया था (निर्गमन 28:41; 40:15); नये नियम में, सभी मसीहियों को याजक कहा गया है (1 पतरस 2:5, 9)।
- पुराने नियम में, सातवां दिन परमेश्वर को समर्पित करने के लिए था (निर्गमन 20:8-11); नये नियम में, आराधना का हमारा विशेष दिन सप्ताह का पहला दिन (प्रेरितों 20:7),[5] अर्थात रविवार है।
- पुराना नियम कुछ निश्चित भोजनों को खाने से मना करता था, जैसे कि सूअर का मांस (लैव्यव्यवस्था 11:7); ये पाबन्दियां नये नियम में हटा दी गई हैं (प्रेरितों 10:9-16)।

इन तुलनाओं को लगभग असीमित समय तक जारी रखा जा सकता था। दोनों नियमों

के निर्देशों को पूरी तरह से मानने का कोई भी ढंग नहीं है। तो फिर, हमें किस नियम का पालन करना चाहिए? नीचे दिया गया रेखाचित्र इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए आपकी सहायता करेगा।

पुराना नियम नया नियम

नियम = वाचा = समझौता

पहले, चार्ट के नीचे के शब्दों को देखिए: ''नियम=वाचा=समझौता।'' हिन्दी बाइबल के अनुवाद में कभी ''नियम'' और कभी ''वाचा'' मिलता है, जैसे कि ''पुराने नियम'' (2 कुरिन्थियों 3:14) और ''नई वाचा'' (मत्ती 26:28; 1 कुरिन्थियों 11:25; 2 कुरिन्थियों 3:6; इब्रानियों 9:15) में। आमतौर पर, हिन्दी बाइबल की उन आयतों में मिलने वाले यूनानी शब्दों का अनुवाद ''वाचा'' ही किया गया है। (पढ़िये इब्रानियों 8:6, 7, 13; 9:1; 12:24)। जब हम पुराने नियम की बात कर रहे होते हैं, तो पुरानी *वाचा* की बात कर रहे होते हैं। जब हम नये नियम की बात करते हैं तो नई *वाचा* की बात कर रहे होते हैं।

वाचा क्या है? वाचा दो पक्षों के बीच एक *समझौता* है। पुरानी वाचा परमेश्वर और यहूदी लोगों के बीच एक समझौता था (व्यवस्थाविवरण 5:1-4)। यह यहूदियों (और यहूदी मत धारण करने वालों) को छोड़कर[6] किसी और पर बाध्य नहीं थी। नया नियम परमेश्वर और मसीहियों के बीच समझौता है (इब्रानियों 10:16)।

अब चित्र का ऊपरी भाग देखिए। क्रूस यीशु के क्रूस को दर्शाता है। क्रूस के बाईं ओर का क्षेत्र पुराने नियम के समय को दर्शाता है, जबकि दाईं ओर का क्षेत्र नये नियम के युग को दर्शाता है। ध्यान दें कि बाईं ओर का तीर क्रूस की ओर आगे को संकेत करता है, जबकि दाईं ओर का तीर क्रूस की ओर पीछे को संकेत करता है।

पहले, आपको यह समझना ज़रूरी है कि पुराना नियम यीशु की ओर आगे को देखता था। परमेश्वर ने पुरानी वाचा केस्थायी होने को कभी नहीं चाहा। यिर्मयाह ने इस प्रकार से लिखा :

''यहोवा की यह भी वाणी है, सुन, ऐसे दिन आने वाले हैं जब मैं इस्राएल और

यहूदा के घरानों से *नई* वाचा बान्धूंगा। वह उस वाचा के समान न होगी जो मैंने उनके पुरखाओं से उस समय बान्धी थी'' (यिर्मयाह 31:31, 32क)।[7]

पुरानी वाचा ने कितनी देर तक रहना था? पौलुस ने गलतियों 3 अध्याय में मसीहियों को बताया कि पुरानी वाचा इब्राहीम को दी गई प्रतिज्ञा के साथ ''जोड़ी'' गई ''कि उस वंश के आने *तक* रहे, जिसको प्रतिज्ञा दी गई थी'' (आयत 19)। इसी अध्याय की आयत 16 बताती है कि वह ''वंश'' कौन था: ''निदान, प्रतिज्ञाएं इब्राहीम को, और उसके वंश को दी गईं। वह यह नहीं कहता, कि वंशों को; जैसे बहुतों के विषय में कहा, पर जैसे एक के विषय में कि तेरे *वंश* को: और वह *मसीह* है।'' आयत 24 में पौलुस ने कहा, ''इसलिए व्यवस्था मसीह तक पहुंचाने को हमारा शिक्षक हुई है।'' पुराना नियम मनुष्यजाति को मसीह तक लाने के लिए था और उसने तब तक रहना था जब तक मसीह नहीं आया। इसलिए चित्र में बाईं ओर का तीर आगे की ओर इशारा करता है।

तथापि, तीर *क्रूस* की ओर ही क्यों संकेत करता है? कुलुस्से के मसीहियों को अपने पत्र में, पौलुस ने कहा कि यीशु की मृत्यु ने ''विधियों का वह लेख जो हमारे नाम पर, और हमारे विरोध में था, मिटा डाला; और उसको क्रूस पर कीलों से जड़कर साम्हने से हटा दिया है'' (कुलुस्सियों 2:14)। प्रतीकात्मक रूप से, यीशु ने निश्चित आज्ञाओं को, यह घोषणा करके कि अब वे प्रभावी नहीं हैं, क्रूस पर कीलों से जड़ दिया।[8] पौलुस किन आज्ञाओं की बात कर रहा था? उसने उनमें से कुछ का उल्लेख उसी संदर्भ में किया था: उसने कहा कि आज्ञाएं मिटाई जा चुकी हैं, इसलिए किसी को भी ''खाने-पीने या पर्ब्ब या नये चांद, या सब्तों के विषय में'' (कुलुस्सियों 2:16) उनका न्याय नहीं करना चाहिए (अर्थात, उन पर दोष नहीं लगाना चाहिए)। यहां विलक्षण तत्व सब्त है। खाने, पीने, और त्यौहारों के विषय में बहुत सी आज्ञाएं दी गई थीं, परन्तु नियमों के केवल एक ही संग्रह में सब्त के सम्बन्ध में निर्देश थे: पुराना नियम, जो दस आज्ञाओं के इर्द-गिर्द घूमता था, चौथी आज्ञा में लिखा गया है, ''तू विश्राम दिन (सब्त) को पवित्र मानने के लिए स्मरण रखना'' (निर्गमन 20:8)। इस प्रकार (पौलुस की शब्दावली का उपयोग करते हुए) पुराने नियम को क्रूस पर कीलों से जड़ दिया गया।

अब आइए अपने चित्र में क्रूस के दाईं ओर देखते हैं। मसीह की मृत्यु ने न केवल पुराने नियम (वाचा) के अन्त का संकेत दिया, बल्कि नये नियम (वाचा) के आरम्भ का शुभ संदेश भी दिया। इब्रानियों 9:15 यीशु को ''नई वाचा का मध्यस्थ''[9] कहता है। फिर शास्त्र में व्याख्या है, ''क्योंकि जहां वाचा बान्धी गई है, वहां वाचा बान्धने वाले की मृत्यु को समझ लेना भी आवश्यक है। क्योंकि ऐसी वाचा मरने पर पक्की होती है, और जब तक वाचा बान्धने वाला जीवित रहता है, तब तक वाचा काम की नहीं होती'' (इब्रानियों 9:16, 17)। यहां ''वाचा'' एक विशेष प्रकार के समझौते को कहा गया है जिसे हम ''अन्तिम वसीयत और विल'' कहते हैं। (हिन्दी की बाइबल में नीचे दिए गए स्पष्टीकरण से इस आयत को समझना और भी आसान हो जाता है।) किसी व्यक्ति की अन्तिम वसीयत

अर्थात विल कब प्रभावी होती है ? *जब वह मरता है*। इसी प्रकार, यीशु की अन्तिम वसीयत और विल तब प्रभावी हुए, जब वह क्रूस पर मरा।[10]

एक आम ग़लतफ़हमी है कि यीशु का जन्म नये नियम के समय का आरम्भ था; यह सत्य नहीं है। यीशु स्वयं पुराने नियम के अधीन रहा। वह एक अच्छा यहूदी था और हमेशा पुराने नियम की विधियों का पालन करता था। (वास्तव में, केवल वह ही अकेला ऐसा व्यक्ति था जिसने पूर्ण सिद्धता के साथ उन्हें पूरा किया।) कुछ लोगों को यह बात उलझा देती है। उदाहरण के लिए, कई लोग ऐसे हैं जो इस तथ्य की ओर ध्यान देते हैं कि यीशु ने सब्त की पालना की थी (मरकुस 1:21; लूका 4:16) और वे ज़िद करते हैं कि इसलिए हमें भी सब्त (सप्ताह का सातवां दिन) के दिन आराधना करनी चाहिए। तथापि, पृथ्वी पर अपने जीवनकाल में यीशु ने पुराने नियम की *सभी* विधियों का पालन करने के लिए उत्साहित किया था (मत्ती 19:17), जिसमें जानवरों के बलिदानों की भेंटें भी शामिल हैं (मत्ती 5:23; 8:4)। नये नियम का आरम्भ मसीह के जन्म से नहीं, बल्कि उसकी मृत्यु से दर्शाया गया है।

रेखाचित्र का अध्ययन करें। यहूदी जो यीशु की मृत्यु से पूर्व रहते थे, वे पुराने नियम के प्रबन्ध के अधीन थे; हम में से जो क्रूस के इस ओर रहते हैं वे नये नियम के प्रबन्ध के अधीन रहते हैं। यीशु की मृत्यु एक विभाजक बिन्दु है।

कुछ आरम्भिक मसीही, विशेषकर जिनका पालन-पोषण यहूदियों के रूप में हुआ था, इस बात पर संघर्ष करते रहे कि अब वे पुराने नियम के अधीन नहीं हैं। कुछ यहूदी मसीहियों ने तो यहां तक कोशिश करके अन्यजाति[11] मसीहियों को इस बात के लिए बाध्य किया कि उन्हें व्यवस्था का या कम से कम इसके कुछ भागों का पालन करना चाहिए, जैसे कि खतना।[12] गलतियों और इब्रानियों की पुस्तकों सहित, नये नियम की कई पुस्तकें इस मुश्किल से दो-चार होती हैं। मैंने पहले ही गलतियों की पुस्तक से कुछ पदों का उल्लेख किया था; मैं कुछ और पर्दों को आपके साथ साझा करता हूं।

पुन:, गलतियों 3 को देखिए: पौलुस ने कहा कि ''व्यवस्था मसीह तक पहुंचाने को हमारी शिक्षक हुई है, कि हम विश्वास से धर्मी ठहरें। परन्तु जब विश्वास आ चुका, तो हम अब शिक्षक के अधीन न रहे'' (आयतें 24, 25)। जैसे हमने पहले देखा कि, पुराने नियम का एक मुख्य उद्देश्य मनुष्यजाति को मसीह की ओर ले जाना था। जब एक बार यह उद्देश्य पूरा हो गया, तो लोग उस व्यवस्था के ''अधीन न रहे।''

गलतियों 5 में पौलुस ने इस बात पर और भी अधिक ज़ोर दिया है। आयत 3 में उसने कहा, ''मैं हर एक खतना कराने वाले को जताए देता हूं, कि उसे सारी व्यवस्था माननी पड़ेगी।'' ''खतना'' शब्द यहां एक धार्मिक प्रथा के रूप में किए खतने को कहा गया है, न कि डॉक्टर की सलाह पर हुए खतने को। कुछ यहूदी मसीही गैरयहूदी मसीहियों को सिखा रहे थे (जैसे गलतिया में रहने वाले लोगों को) कि गैरयहूदी पुरुषों का खतना पुराने नियम की शिक्षा के अनुसार होना आवश्यक है। गलतियों 5:3 में पौलुस के कहने का तात्पर्य यह है कि यदि तुम व्यवस्था के एक *भाग* के अधीन होना चाहते हो, तो तुम्हें *सारी* व्यवस्था को मानना पड़ेगा।

मैं किसी ऐसे व्यक्ति को नहीं जानता जो पुराने नियम की सभी आज्ञाओं (साल में तीन बार यरूशलेम जाना, जानवरों के बलिदान देना, भोजन सम्बन्धी नियमों इत्यादि) की पालना करना चाहता है। फिर भी, बहुत से लोग, पुराने नियम की कुछ निश्चित आज्ञाओं को ''उठाकर चुनना'' चाहते हैं, जैसे सब्त को मानना, अलग से याजकाई होना, या आराधना में वाद्य-संगीत का उपयोग करना। पौलुस ने यह स्पष्ट किया कि हम ऐसा नहीं कर सकते। यदि हम पुराने नियम के किसी भाग को एक नियम के रूप में मानते हैं, तो हमें पूरी व्यवस्था को मानना होगा। यदि हम इसके एक भाग को लागू करते हैं, तो हमें इसे पूरा ही लागू करना होगा।

इस प्रकार से पुराने नियम को लागू करने के परिणाम काफ़ी बुरे हो सकते हैं, परन्तु गलतियों 5 में उल्लेखित अगला परिणाम उससे भी घातक है। आयत 4 में पौलुस ने कहा, ''तुम जो व्यवस्था के द्वारा धर्मी ठहरना चाहते हो, मसीह से अलग और अनुग्रह से गिर गए हो।'' पुराना नियम मुख्यत: एक नियम और कामों की पद्धति थी जबकि नया नियम मुख्यत: अनुग्रह और विश्वास का प्रबन्ध है। पौलुस ने गलतिया में मसीहियों को बताया कि यदि वे पुराने नियम के खतने के संस्कार के आगे समर्पित हो जाते हैं तो यह उन्हें मसीह से अलग कर देगा क्योंकि कोई भी एक समय में दो अलग-अलग धार्मिक पद्धतियों के अधीन नहीं हो सकता। वे व्यवस्था की पद्धति के अधीन अथवा अनुग्रह के प्रबन्ध के अधीन हो सकते थे, परन्तु दोनों के अधीन नहीं।

मैं इसे दूसरे ढंग से लेता हूं: यदि वे व्यवस्था के प्रबन्ध को चुनते (पुराने नियम के खतने के संस्कार को चुनकर), तो उनका उद्धार नहीं हो सकता था। व्यवस्था के प्रबन्ध के द्वारा किसी का भी उद्धार नहीं हो सकता, क्योंकि कोई भी व्यवस्था की पालना पूरी तरह से नहीं कर सकता (रोमियों 3:23; 7:15, 18, 19)। यदि हम चाहते हैं कि हमारा उद्धार हो, तो यह केवल परमेश्वर के अनुग्रह और कृपा से ही हो सकता है (इफिसियों 2:8, 9; 1 पतरस 2:10)। यदि इसके विपरीत गलतिया के लोग पुराने नियम की ओर वापिस जाने का रास्ता चुनते, तो उन्होंने ''अनुग्रह से गिर'' जाना था; उन्होंने ''मसीह से अलग'' हो जाना था। कितना भयंकर है यह!

पुराना नियम नया नियम

दस आज्ञाएं

यह समझना अति आवश्यक है कि आज हम नये नियम के अधीन हैं, पुराने नियम के नहीं। इसलिए कि कोई गलतफहमी न रहे, मुझे ज़ोर देना चाहिए कि इसका अर्थ यह है कि *हम अब दस आज्ञाओं के अधीन नहीं हैं*।[13] दस आज्ञाएं (निर्गमन 20; व्यवस्थाविवरण 5) उस पुरानी वाचा का सार थीं जिसे क्रूस पर कीलों से जड़ दिया गया था।

हो सकता है कि कोई विरोध करे: ''यदि हम दस आज्ञाओं के अधीन नहीं हैं, तो इसका अर्थ यह हुआ कि हम हत्या और चोरी कर सकते हैं और वे दूसरी बातें भी कर सकते हैं जिनकी उन आज्ञाओं में मनाही की गई थी।'' नहीं। आज, लोगों को हत्या या चोरी नहीं करनी चाहिए क्योंकि *नये नियम में* इसकी मनाही की गई है (रोमियों 13:9; इफिसियों 4:28)। वास्तविकता तो यह है, कि असल में, दस में से नौ आज्ञाएं, नये नियम में दोहराई गई हैं।[14] दस आज्ञाओं में से केवल एक जो नये नियम में नहीं दोहराई गई वह चौथी आज्ञा है: ''तू विश्राम दिन (सब्त) को पवित्र मानने के लिए स्मरण रखना'' (निर्गमन 20:8)। आज आराधना का हमारा ''विशेष'' दिन सप्ताह का पहला दिन है, सातवां नहीं।[15]

यह सिद्धांत कि हम नये नियम के अधीन हैं, पुराने के नहीं–उठने वाले बहुत से धार्मिक प्रश्नों का उत्तर देगा। कोई कह सकता है, ''बाइबल आराधना के एक पवित्र स्थान की बात करती है जिसे मन्दिर कहते हैं। हमारे पास एक पवित्र भवन क्यों नहीं है जिसमें हम आराधना कर सकें?'' इसका उत्तर है, ''क्योंकि वह पुराने नियम में है, नये में नहीं।'' शायद कोई और कह सकता है, कि ''बाइबल विशेष चोगों वाली अलग याजकाई की बात करती है। हम में यह क्यों नहीं है?'' उत्तर है ''क्योंकि वह पुराने नियम में है, नये में नहीं।'' अभी कोई और भी पूछ सकता है, ''मैंने बाइबल में धूप जलाने और आराधना के कार्य के रूप में गाने में साज़ बजाने के बारे में पढ़ा है। हम यह सब क्यों नहीं करते?'' उत्तर है ''क्योंकि वह पुराने नियम में है, नये में नहीं।''

	पुराना नियम	नया नियम
मन्दिर	याजक	
धूप	वाद्य–संगीत/बाजे	

अध्ययन जारी रखते हुए, यह ढूंढ़ने के लिए कि परमेश्वर को कैसे प्रसन्न कर सकते हैं और मृत्यु पश्चात स्वर्ग में कैसे जा सकते हैं, हम *नये* नियम में देखेंगे।

पुराने नियम का महत्व

यह कहने के बाद, मैं ज़ोर देकर जल्दी से कह देता हूं कि इसका अर्थ यह नहीं है कि एक मसीही के लिए पुराने नियम का कोई महत्व नहीं है। 1 कुरिन्थियों 10 में पौलुस ने अपने पाठकों को पुराने नियम की एक घटना का स्मरण दिलाकर कहा, ''परन्तु ये सब बातें, जो उन पर पड़ीं, दृष्टांत की रीति पर थीं: और वे हमारी चेतावनी के लिए जो जगत के अन्तिम समय में रहते हैं लिखी गई हैं'' (आयत 11)। पुराना नियम उदाहरणों से भरा हुआ है जिनसे हम सीख ले सकते हैं। उदाहरण के लिए, नये नियम में, बताया गया है कि हमें ''विश्वास से'' जीवित रहना है (रोमियों 1:17; गलतियों 2:20), परन्तु इसका क्या अर्थ है? एक प्रकार से हम ढूंढ़ सकते हैं कि यह इब्राहीम के समान पुराने नियम में विश्वास के उदाहरणों पर ध्यान देना है (देखिए इब्रानियों 11:9, 17)।

पौलुस ने रोम में मसीहियों को बताया कि, ''जितनी बातें पहिले से [अर्थात, पुराने नियम में] लिखी गईं, वे हमारी ही शिक्षा के लिए लिखी गई हैं कि हम धीरज और पवित्र शास्त्र की शान्ति के द्वारा आशा रखें'' (रोमियों 15:4)। नये नियम में एक सौ से कम वर्षों का और मसीहियत के केवल साठ वर्षों का इतिहास है। इसमें तत्काल प्रतिफल देने के कुछ उदाहरण हैं (एक नकारात्मक उदाहरण के लिए, देखिए प्रेरितों 5:1-11), परन्तु मुख्यत: यह हमें बताती है कि हमारा जीवन कैसा है और यदि हम परमेश्वर की आज्ञा मानते हैं तो वह हमें आशीष देने की प्रतिज्ञा करता है। हम शायद चकित हो सकते हैं कि क्या वास्तव में परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करता है। पुराना नियम हमें आश्वस्त करता है कि वह अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करता है। क्योंकि पुराने नियम में कई हज़ार वर्षों का इतिहास है, हम उसमें आज्ञाकारिता और अवज्ञा के परिणामों को स्पष्ट रूप से देख सकते हैं: जब लोगों ने परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया, तो उन्हें सचमुच आशीष मिली; जब उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा तोड़ी, तो उन्हें इसके बदले में कष्ट झेलने पड़े। इस प्रकार, पुराने नियम के वचनों से, हमें यह निश्चय दिलाया गया है कि ''परमेश्वर सच्चा है'' (1 कुरिन्थियों 1:9)।

पुराने नियम का अध्ययन करने से कई और लाभ भी मिलते हैं: यदि आप संसार और मनुष्य के आरम्भ के बारे में जानना चाहते हैं, तो पुराना नियम आपके लिए एक मुख्य स्रोत है (उत्पत्ति 1; 2)। नये नियम का अधिकांश भाग (उदाहरण के लिए, इब्रानियों की पुस्तक) पुराने नियम के कुछ ज्ञान को पहले से मानता है। पुराने नियम का अध्ययन आपको नये नियम को समझने में सहायता देगा। इसलिए मैं आपको प्रोत्साहित करूंगा कि आप बाइबल को पढ़ने और इसका अध्ययन करने के अपने कार्यक्रम में पुराने नियम को शामिल करें। परन्तु, हमेशा ध्यान रखें कि *आज* हम यीशु मसीह की नई वाचा के अधीन हैं। नये नियम में ही, हमें विशेष निर्देश मिलते हैं, जिनकी हमें अनन्त जीवन के लक्ष्य तक पहुंचने के लिए आवश्यकता है।

सारांश

बाइबल हमारा धार्मिक अधिकार है। विशेषकर, नया नियम वह वाचा है जो आज हम

पर लागू है। इस कारण, सूचना और निर्देश के लिए हमारा मुख्य स्रोत नया नियम ही होना चाहिए। क्या आप इससे सहमत हैं ? यदि हां, तो आप अगले पाठ के लिए तैयार हैं।

पाद टिप्पणियां

[1]यूनानी शब्द के अनुवाद ''पवित्र'' अथवा ''पावन'' का अर्थ है ''किसी विशेष उद्देश्य के लिए अलग किया हुआ।'' जब मैं बच्चों को पढ़ाता हूं, तो मैं उन्हें बताता हूं कि ''पवित्र'' का अर्थ है ''विशेष।'' [2]जब कोई मरता है, तो हम कहते हैं ''उसने अन्तिम सांस ली'' अथवा ''पूरा हो गया।'' ''पूरा होना'' का अर्थ है ''श्वास निकल जाना।'' [3]कारणों में यह है: पुराना नियम कई हज़ार वर्षों का इतिहास है, जबकि नये नियम में एक सौ वर्षों से कम का इतिहास है। [4]इसका यह अर्थ नहीं है कि नये नियम में कोई स्पष्ट नियम नहीं है। स्पष्ट नियम सकारात्मक और नकारात्मक दोनों-नये नियम में दिए गए हैं, परन्तु बल *सिद्धांतों* पर केन्द्रित किया गया है कि परमेश्वर चाहता है कि हम उन्हें अपने जीवन में लागू करें। मैं एक उदाहरण देता हूं कि हम अपने बच्चों के साथ कैसे पेश आते हैं। जब तक वे छोटे होते हैं, हम उन्हें बहुत स्पष्ट निर्देश देते हैं कि उन्हें कैसा व्यवहार करना चाहिए। उनके बड़े हो जाने पर, हम कहते हैं, ''अच्छे बनो'' और उन से अपेक्षा करते हैं कि वे कुछ भी करने के लिए उस सामान्य सिद्धांत को अपने ऊपर लागू करें। [5]हम इसकी चर्चा पाठ 9 में करेंगे। [6]यहूदी लोग याकूब की संतान थे (और हैं), जो कि इब्राहीम और सारा का पोता था। क्योंकि याकूब का नाम बदलकर इस्राएल हो गया था, इसलिए बाइबल इन लोगों को भी इस्राएली कहती है। कभी-कभी, इब्रानी भाषा बोलने के कारण, बाइबल में उन्हें इब्रानी कहा गया है। [7]यिर्मयाह 31:33, 34 और इब्रानियों 8:6-13 भी देखिए। [8]विभिन्न समाजों में कानूनी समझौतों को प्रचारित करने के भिन्न-भिन्न ढंग हैं। कई जगह, समझौते जनता के बीच पढ़े जाते हैं; अन्य स्थानों में, समझौते समाचारपत्र में प्रकाशित किए जाते हैं। स्पष्टत:, बाइबल के समयों में विशेष समझौतों को घोषित करने के लिए कि यह समझौता पूरा हो गया है और अब प्रभावी नहीं रहा, उन्हें सार्वजनिक स्थलों पर टांग दिया जाता था। लगता है कि पौलुस के द्वारा यही तस्वीर प्रयोग में लाई गई थी जब उसने (पाप के) कर्ज़ और आज्ञाओं (जिन्होंने मनुष्यों को पाप से अवगत कराया) को ''क्रूस पर कीलों से जड़ने'' की बात की। [9]इब्रानियों 9:15 का शेष भाग व्याख्या करता है कि यीशु का लोहू न केवल उनका उद्धार करता है जो नई वाचा के अधीन हैं, बल्कि उनको भी बचाता है जो पुरानी वाचा के अधीन हैं। [10]उदाहरण को और विस्तार से स्पष्ट किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, मनुष्य की मृत्यु के पश्चात, साधारणत: वसीयत की शर्तों के पढ़े जाने और लागू होने से पहले ''परख अवधि'' होती है।

[11]''अन्यजाति या गैरयहूदी'' उनको कहा गया है जो *यहूदी नहीं* हैं। इस परिभाषा के अनुसार, मैं एक अन्यजाति हूं, और सम्भवत: आप भी। [12]यहूदी लड़कों का आठ दिन के होने पर धार्मिक संस्कार के रूप में खतना किया जाता था (लैव्यव्यवस्था 12:3)। [13]2 कुरिन्थियों 3:3, 7, 8; रोमियों 7:4, 7 देखिए। [14]कई बातों को नये नियम में उन्हीं शब्दों के साथ दोहराया गया है जिस प्रकार से वे पुराने नियम में थीं; अन्य सिद्धांत रूप में मिलती हैं। दस आज्ञाओं में से अधिकांश में वे मूल गुण हैं जो किसी भी युग में होने आवश्यक हैं। इस कारण नौ आज्ञाओं को नई वाचा में शामिल किया गया है जो परमेश्वर ने अपने लोगों के साथ बान्धी थीं। [15]इस पर चर्चा हम पाठ 9 में करेंगे।